शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गीता का कर्मवाद और शैक्षणिक जीवन में नेतृत्व का प्रभाव

अश्मिका सिन्हा (शोधार्थी)
वीर बहादुर सिंह जौनपुर यूनिवर्सिटी
जौनपुर, उत्तर प्रदेश

शोध संक्षेप

गीता के कर्मवाद से आच्छादित स्वयं श्री विष्णु अवतार सारखी भगवान कृष्ण के नेतृत्व और गीता के 18वें अध्याय में दिये गये अर्जुन के उपदेश में नेतृत्व के सूक्ष्म और स्थूल गुणों एवं उसके प्रभावों के सम्पूर्ण अवयव विद्यमान हैं। गीता में स्वयं भगवान की प्राप्ति के दो महत्वपूर्ण विशिष्ट योग के बारे मे कहा गया है. सांख्ययोग और कर्मयोग में नेतृत्वगुण की प्रभावकारिता का आशय विद्यमान है और आजीवन गीता से नेतृत्व प्रभाव के अनंत आयाम परिलक्षित होते रहेंगे। सीमितत: शोध दृष्टि से सांख्ययोग साधन के सन्यास आश्रम में जहाँ नेतृत्व का मार्ग ईश्वरीय स्वरूप में है वहीं कर्मयोग में गृहस्थ आश्रम और शैक्षणिक जीवन में भी नेतृत्व के गुण एवं प्रभाव है। यही कारण है कि भगवान ने सांख्ययोग को कठिन बतलाया है तथा कर्मयोग साधन सुगम होने के कारण अर्जुन के प्रति जगह-जगह कहा है कि तू निरंतर मेरा चिन्तन करता हुआ कर्मयोग का आचरण कर। प्रस्तुत शोध लेख में भगवद्गीता का कर्मवाद और शैक्षणिक जीवंन में नेतृत्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

भूमिका

गीता में नेतृत्व की सार्वकालिक सोच है जो 21वीं सदी में भी देखी जा सकती है। आधुनिक नेतृत्व अवधारणा के सभी अवयव यथा दूरदृष्टि प्रेरणा सशक्तिकरण, स्वज्ञान, कार्यक्षमता, सूझबुझ, अनुशासन, सभी को साथ लेकर चलने की कला, कार्य के प्रति लगाव, लक्ष्यप्राप्ति, अधीनस्थ की बातों को सुनना, निर्णय लेने की क्षमता, सम्प्रेषण दक्षता, टीम क्षमता, समस्या के समाधान की क्षमता, जिज्ञासु होना, नम्रता, आत्मविश्वास, दूसरे के हित के प्रति सचेत रहना, भावनात्मक होना, उत्तेजना अथवा क्रोध पर काबू पाना, लचीलापन, उत्तरदायी होना, दूसरों के विचारों को आत्मसात करना, अन्य लोगों की बुद्धि को जानना आदि तथ्यों की गीता में बारीकी से विमर्श किया गया है। इतना ही नहीं मूल्य आधारित नेतृत्व भी श्रीमद्भगवतगीता में समाहित है।

नेतृत्व गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व, प्रभावकारी नेतृत्व आदि के संबंध में कई सार्थक परिभाषाएं, व्याख्याएं उसके अवयव के साथ दुनिया की तमाम भाषाओं में रचित स्रोतों में व्याप्त हैं, परंतु जब हम नेतृत्व और उसके प्रभावों को मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, अध्यात्मिक, पारम्परिक आदि रूपों से ज्ञान के संदर्भ में ढूढते हैं, वैसी स्थिति में श्रीमद्भगवतगीता का कोई विकल्प नहीं है। वस्तुत: श्रीमद्भगवतगीता, नेतृत्वकला की एक बेजोड प्रस्तुति है। इसके प्रभाव धार्मिक, सामाजिक ही नहीं अपितु सार्वकालिक नैतिक और चारित्रिक भी है।

विद्वतजन श्रीमद्भगवतगीता के दर्शन, अध्यात्मवाद (वेदांत) और साहित्यिक आधार के अध्ययन में काफी रूचि लेते रहे हैं। विद्वानों का 3000 ई.पू. लिखित यह साहित्य विशेष रुप से अनुकरणीय रहा है और ज्ञानीजनों ने अपनी लेखनी में उद्धृत भी किया है।

आधुनिक समय के प्रमुख प्रबंधन गुरू एवं चिंतक पीटर सीनेज ने तो गीता को □पांचवां अनुशासन एवं वर्तमान कहा है।□1

दुर्भाग्यवश श्रीमद्भगवतगीता को कभी भी नेतृत्व प्रभावकारिता अथवा नेतृत्व के संदर्भ में प्रमुख रूप से पढ़ा अथवा समझा ही नहीं गया और यह स्वचिंतन ही मुझे शोधार्थी बनाने में महत्वपूर्ण रहा, जिसमें शोध निदेशक ने भी हमें मदद की। आज हम जब श्रीमद्भगवतगीता के ज्ञान तत्व से परिचित हो रहे हैं तब लगता है कि गीता में नेतृत्व संबंधी पाठों की भरमार है। आज के युग में नेतृत्व सिद्धांत और व्यवहार पर विश्व के सभी देश नेतृत्व प्रभावकारिता का पिछले पाँच दशकों से न सिर्फ विश्लेषण, सर्वेक्षण अथवा आंकड़ों को देश के अग्रणी सूची या विकास से जोड़कर देख रहे हैं बल्कि विश्वगुरु बनने का सपना भी देख रहे हैं। विश्व राजनीतिक नेतृत्व में गाँधी, नेहरू, इंदिरा गाँधी, अटल बिहारी बाजपेयी का भारतीय नेतृत्व कौशल का जीवंत उदाहरण सम्मुख है। संयुक्त राज्य अमेरिका में तो गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व पर सर्वेक्षण होता रहता है और प्रबंधन समूह विश्व में सबसे अच्छा राष्ट्र, सबसे अच्छी नीति, सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था आदि से जोड़कर देखता रहता है। वर्ष 2005 में अमेरिका में सेंटर फार पब्लिक लीडरशिप हार्वड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 1317 बौद्धिक व्यापारिक व्यक्तियों के सैंपलिंग से यह निष्कर्ष निकाला गया कि राष्ट्र पतन की ओर जा रहा है, क्योंकि दो तिहाई व्यक्तियों ने अमेरिका में नेतृत्व संकट की बात स्वीकार की है। आज विश्व में नेतृत्वप्रभावकारिता राष्ट्र के विकास और गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन का पर्याय माना जाता है। यही कारण है कि प्रबंधन के गुरु एवं गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन हेतु अमेरिका में कई विशिष्ट प्रबंधन व्यापारिक एवं सेल्फ क्लासेस विद्यालय खोले गये, जिनका लक्ष्य था कि भारतीय दार्शनिकता और श्रीमद्भगवतगीता जैसे ग्रंथों का सहारा लेकर नेतृत्व कौशल की बारीकियों को समझा जाय। पश्चिमी विद्वानों का मानना है कि सामान्यतः गीता को दर्शनवादी आध्यात्म रहस्य से जोड़कर लोग अध्ययन करते हैं अथवा महाभारत के कौरव और पांडवों के बीच व्यक्तिगत युद्ध की तरह से इसे नैतिक परिणाम लिए हुए देखते हैं, जबकि यह दार्शनिक ग्रंथ (श्रीमद्भगवतगीता) आज के प्रबंधन हेतु सर्वोत्तम है और इसकी नेतृत्वप्रभावकारिता भी बेमिसाल है। श्रीमद्भगवतगीता सभी प्रकार के आधुनिक नेतृत्व और गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व के लिए कई महत्त्वपूर्ण सलाह देती है।

वर्त्तमान समय का नेतृत्व

सही नेतृत्व किसी भी संस्था को उसके शिखर पर पहुंचा सकता है और वैश्विक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। दूसरी ओर अगर गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व कमजोर हो तो वैसी स्थिति में संस्थान कमजोर अथवा समाप्त हो सकता है। यही कारण है कि आज के समये में चाहे वह व्यापारिक संस्थान हो सरकारी हो अथवा सामाजिक संस्थान ने नेतृत्वगुण, सृजनात्मकता, जीवनशैली आदि गुणों को अनिवार्य कारक के रूप में स्वीकार किया है।

आज के संदर्भ में नेतृत्व प्रभावकारिता का क्षेत्र दो तरह की विधाओं में देखा जा रहा है। प्रथमतः नेतृत्वकर्ता स्वामित्व और उत्तरदायित्व अपने

ऊपर लेकर यह विश्वास रखते हैं कि उनमें निर्णय लेने की क्षमता है और उसे सही मानकर क्रियान्वयन का अधिकार भी है। वैसे नेतृत्वकर्ता सोचते हैं कि संस्थान के अच्छे परिणाम का उत्तरदायित्व उन्हीं का है और इसके लिए वह अपने अधीनस्थ कर्मियों पर लक्ष्य प्राप्ति हेतु दवाब डालते हैं। ऐसे नेतृत्व संबंधी प्रारूप से तात्पर्य यह है कि नेतृत्वकर्ता में ही सारी शक्तियां केन्द्रित हैं और आर्थिक, प्रशासनिक संसाधनों के वे मालिक हैं। दुर्भाग्य से कभी-कभी ऐसे नेतृत्वकर्त्ता बाजारू मुनाफा के लिए केवल संस्थान हित ही देखते हैं। इस तरह से संचालित संस्थानों के कर्मियों का कार्य समयानुसार और मानदेय के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति से अधिक कुछ भी नहीं रहती। अधीनस्थ लोग अनुभव करते हैं कि संस्थान के लिए सही सोच और अधिक कार्य की भावना भी बेकार है। आजकल सरकारी संस्थानोंए सामाजिक संस्थानों और कुछ व्यापारिक संस्थानों में यह स्वरूप देखा जा सकता है, जो न तो संस्थागत हित में है और न ही राष्ट्र अथवा समाज के हित में है, सिर्फ नेतृत्वकर्ता का हित ही साधा जाता है। इसे बाजारू संविदा का सिद्धांत माना जाता है।

प्राचीन ग्रंथों में खासकर श्रीमद्भगवतगीता की तरफ नेतृत्व के उपागम की संस्थागत सामाजिक, धार्मिक हित में देखते हैं तब हम कई महत्तावपूर्ण तथ्यों से अवगत हो पाते हैं। यदि हम गीता में कृष्ण-अर्जुन संवाद देखते हैं तब इसके प्रत्येक अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को नेतृत्व क्षमता के कई आयामों का निर्देश देते हुए देखते हैं। यदि हम इन तथ्यों का सावधानी से विश्लेषण करें तब तीन महत्त्वपूर्ण विचार (दर्शन) नेतृत्व के संदर्भ में दिखाई पड़ते हैं।

1 उदाहरण देकर नेतृत्व करने की भगवान श्री कृष्ण में सशक्त क्षमता।

2 चित्त अथवा स्वभाव की स्थिरता जैसी नेतृत्व स्थितिप्रज्ञता और

3 एक-दूसरे को समझने की अभूतपूर्व नेतृत्व क्षमता।

सही नेतृत्वकर्ता वही होता है जो अच्छी या बुरी पस्थितियों में हमेशा अपनी टीम के साथ खड़ा रहता है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठ तत्तदेवेत्तरो जनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लाकस्तदनुर्वत्तते।। 3.23

इसलिए भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को चेतावनी देकर सलाह देते हैं कि वह अपने को एक अच्छे योद्धा के रूप में धर्मयुद्ध में पेश करे। नेतृत्वकर्ता की कुछ सीमाएं हैं। उसके कुछ सामयिक कर्तव्य हैं जिसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देख रहा है और उसके निमित चरित्र का अनुसरण कर रहा है।

ममवर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।। 3.23

आधुनिक युग में दुर्भाग्यवश नेता अथवा नेतृत्वकर्ता अथवा गुरू की सबसे बड़ी समस्या यही है कि वह खुद आगे बढ़कर नेतृत्व नहीं करना चाहते। वे अपने आपको संस्था अथवा विधि से भी ऊपर समझने लगते हैं। सच तो यह है कि प्रत्येक व्यक्ति आज के समय में नेतृत्व की भूमिका में है। बच्चे अपने माता-पिता द्वारा निर्धारित मूल्य को सीखते हैं। बड़े बुजुर्ग, शिक्षक सभी मूल्य पद्धति से निर्देशित होते हैं जिसके मानक मूल्य में लम्बे समय तक थोड़ा परिवर्तन होता है। सभी को यह सोचना चाहिए चाहे वह समाज का प्रश्न हो या राजनीति का अथवा धर्म का विकट स्थितियों में अपने को आगे आकर समस्या समाधान का प्रतिनिधित्व करना होगा, यही संदेश आधुनिक समय के नेतृत्वकर्ता के लिए भी है।3

आज का नेतृत्व असफलता या बुरे समय में स्वयं ही असफल हो जाता है। यह आधुनिक नेतृत्व प्रभावकारिता की सबसे बड़ी कमी है। नेतृत्व चित्त असफल होने पर अस्थिर होने के कारणए संस्थाए, समाज अथवा राष्ट्र अपनी अस्मिता पर ही प्रश्न चिह्न लगाता है। असंतुलन की इस अवस्था में आज के नेतृत्व को श्रीमाद्भागवद्गीता से यह सबक लेना चाहिए। गीता सच में सुगीता के योग्य है और नेतृत्व प्रभावकारिता में चित्त या स्वभाव की स्थिरता का ऐसा बेमिसाल गुण आधुनिक नेतृत्व के लिए एक बड़ी सीख है। श्रीकृष्ण ने गीता के अधिकांश अध्यायों में इस प्रकार के नेतृत्व कौशल को एक समाधानकारी आयाम दिया है। भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दोहरे मानदंडों से भरा पड़ा है। इसमें शुष्क और शीत हवा दोनों बहती है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड के जीवन में सुख और दुःख के क्षण हमेशा रहते हैं।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।।

सुख-दुःख जीवन की सच्चाई है। यह जीवन में आएगा और जाएगा ही। अगर हम जीवन में इस दौर से नहीं गुजरेंगे अच्छे और बुरे दोनों समय में संयमित नहीं रहेंगे, पाप अथवा पुण्य, जीवन-मरण, सत्य-असत्य, अहिंसा-हिंसा आदि के सूक्ष्म और स्थूल रूप को समझने में यदि नाकाम होंगे तथा इन स्थितियों का अनुभव नहीं करेंगे तब तक हम एक अच्छे नेतृत्वकर्ता नहीं हो सकते :

आगमापायिनो□नित्याः तास्तितिक्षस्य भारत। 2.14

आज के नेतृत्व क्षमता पर यदि गौर करें तब हम पाते हैं कि धर्मगुरू, योगगुरू, प्रबंधक अथवा राजनेता सभी के जीवन के दो पहलू. सफलता और असफलता एक प्रासंगिक विषय है। आप जितना भी सकारात्मक सोच रखेंगे असफल होने पर उस समय व्यक्ति अपने को संभाल सकता है लेकिन टूट नहीं सकता। दूसरी ओर आधुनिक विश्व के तथाकथित सम्मानित नेतृत्वकर्ता भी असफल होने पर जिस किसी भी नैया पर हैं डूबने से बचा नहीं पाते, अपवाद यदि कोई हो तो छोड़कर ये नेतृत्वकर्ता जीवन के दोनो पहलू को साथ लेकर चल नहीं पाते। श्रीमद्भगवतगीता में नेतृत्व के चित्त अथवा स्वभाव का यह गुण आधुनिक नेतृत्व कौशल में कहीं भी दिखायी नहीं पड़ता। कुछ आधुनिक नेतृत्व असफलता के बारे में न तो सोचता है और न ही उसे पचा पाता है। जब भी समाज अथवा संगठन में बुरी घटना घटित होती है तब वैसे लोग स्वास्थ्य समस्याए डिप्रेशन, मनोवैज्ञानिक दबाब में आ जाते हैं और यहाँ तक कि वे आत्महत्या तक कर लेते हैं। गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व ठीक इसके विपरीत है, असफल होने पर भी सफलता की चेष्टा और उसकी प्राप्ति उनका लक्ष्य होता है। श्रीमद्भगवतगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अध्याय 2 से अध्याय 14 तक कई प्रसंगों में इन तथ्यों का प्रमुखता से उल्लेख किया है।

सही और बुरी स्थिति में चित्त और स्वभाव की स्थिरता का विकास करना एक अच्छे नेतृत्वकर्ता की पहचान है। महान उपलब्धियों को उत्तेजनापूर्वक हासिल नहीं किया जा सकता है। वैसे नेतृत्वकर्ता जो चित्त अथवा स्वभाव से शांत होता है वह अपने नेतृत्व से विश्व को अपनी मुट्ठी में कर लेते और विपरीत समय में अपने को स्थिर रखकर उपनी ऊर्जा का सदुपयोग करते है। गीता में यह अनोखा पाठ हमें नेतृत्व करने का गुण सिखलाता है। महात्मा गाँधी, टॉलस्टाय, मार्क्स जैसे नेतृत्वकर्ता इसके अनुकरणीय उदाहरण हैं।□4

शिक्षा की परिभाषाएँ

शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से जीवन से संबन्धित होती हैं। यह शिक्षा स्वाभाविक रूप से होती है। शिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण की एक लघु प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण परिस्थितियों को सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसके अंतर्गत विशिष्ट कौशल का अभ्यास किया जाता है। कक्षा का आकार शिक्षण का कालांश तथा प्रकरण का लघु रूप तैयार किया जाता है। शिक्षण-प्रशिक्षण की एक निश्चित नियामावली होती है। यह बालक के आचारण का रूपान्तरण करती है। परंतु रूपान्तरण की प्रक्रिया अज्ञात, अप्रत्यक्ष व अनौपचारिक होती है। शिक्षा को मुख्य रूप से तीन भागों मे बांटा गया है : शिक्षक-छात्र, समाज और शिक्षा एक बहुआयामी प्रक्रिया है। शिक्षा मनुष्य के एक पहलू का विकास न करके अनेक आयामों का विकास करती है। उदाहरण के लिए सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, आध्यात्मिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक व प्राकृतिक।

एडम्स के अनुसार, "शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है। जिसमें एक शिक्षक और दूसरा छात्र होता है।" एक पढ़ाता है और दूसरा पढ़ता है, एक बोलता है और दूसरा सुनता है, एक पथ प्रदर्शक होता है और दूसरा उसका अनुसरण करता है, शिक्षक, छात्र एक दूसरे के प्रति स्नेह का भाव रखते हुए प्रतिक्रिया करते हैं।

स्वामी विवेकाननद : शिक्षा मनुष्य के अन्दर निहित शक्तियों को प्रकट करती है।"

महात्मा गाँधी : शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शारीरिक, मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट विकास है।"

अरस्तू : स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।"

एडम्स : शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है। जिसमें एक शिक्षक और दूसरा छात्र होता है।"

जान ड्यूवी के अनुसार शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक छात्र के साथ-साथ पाठ्यक्रम भी शामिल किया जाता है क्योकि पाठ्यक्रम के अभाव मे शिक्षण कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है।"

जान ड्यूवी : शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमे अध्यापक-छात्र के साथ-साथ पाठ्यक्रम भी शामिल किया जाता है, क्योंकि पाठ्यक्रम के अभाव मे शिक्षण कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है।"

गीता की बात की जाए तो मानव जीवन में नेतृत्व के द्वारा शिक्षा को व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक होता है, मानव के कल्याण, सभ्यता तथा संस्कृति, समाज, राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है। आज के युग में जीवनमूल्य का व्यक्तिगत स्वरूप अत्यंत गम्भीर विषय है, जो नेतृत्व चरित्र को प्रभावित करता है। समाज भी व्यक्तिगत अधिकार को उन्नति का कारण मानता है।

परिवार और समाज के आगे बढ़ने से राष्ट्र अथवा राज्य का विकास होता है। दूसरे आयाम से देखा जाए जो व्यक्तिवादी सोच और विकास स्वार्थपरता का जन्मदाता है, क्योंकि इस तरह के समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति, पद, गरिमा को बहुत महत्व देता है।

श्रीमद्भगवदगीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को परस्पर आश्रित होने का सलाह देते हैं और परस्पर आश्रित सिद्धांत का सम्मान करते हैं। वे कहते हैं कि यह ब्रह्माण्ड ज्ञान, कर्म, योग, धर्म, न्याय आदि अवयवों से न सिर्फ परस्पर जुड़ा हुआ है अपितु बिना शर्त के एक दूसरे के विकास में सहायक भी है। ईश्वर की कृपा से हम सभी प्राणियों का अस्तित्व है और सभी प्राणी भी

ईश्वर के प्रति प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से समर्पित हैं।

देवान्भावयता नेन ते देवा भावयन्तुव। परस्पर भावयन्त श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

नेतृत्वप्रभावकारिता का पहला पाठ है कि नेतृत्वकर्ता परस्पर आश्रय सहयोग को समझे अपनी तरह परिवार के अन्य सदस्यों अथवा वैश्विक कम्पनी के अधीनस्थों को भली-भांति सुने और समझे तथा नीति निर्धारण में उसकी पुष्टि करे। प्रेरणात्मक नेतृत्व, नेतृत्व की उच्च गुणवत्ता है। आधुनिक संदर्भ में नेतृत्वगुण में यह अभाव दिखता है। संस्थागत विकास का मूल आर्थिक युग का मुनाफा व्यक्ति के भावों को निगल रहा है। श्रीमद्भगवदगीता मे अध्यात्म-दर्शन से व्यक्ति की मनःस्थिति को निर्मल करने का तत्व निहित है। श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि स्वार्थहीन बनो ताकि तुममें और अन्य लोगों में हर क्षेत्र में अंतर हो। न किसी से हारो न किसी को डराओ।

यस्मान् न उद्विजेत लोकाः। लोकात न उद्विजेत पयः।।

दुनिया में कई ऐसे लोग हैं जिससे संसार प्रभावित होता है। यह उनका आभामंडल और नेतृत्व का प्रभाव है तभी लोग महात्मा गाँधी जैसी विभूतियों को याद रखते हैं। यह नेतृत्व का ही प्रभाव है जिससे ब्रह्माण्ड का प्रत्येक अणु तत्व सुभाषित हो जाता है। आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करके ही हम महात्मा बुद्ध, राम, कृष्ण और क्राईस्ट को उनके नेतृत्व प्रभावकारिता से सीख लेती है। गीता में नेतृत्वप्रभावकारिता के इतने आयाम भरे पड़े हैं कि आज भी हम गीता का पाठ करते हैं और वह हमें नित नए परिस्थितिजन्य नया पथ दिखलाती है। नेतृत्वकर्ता को चुनौतियों को गले लगाने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए ताकि वह नेतृत्व-प्रभाव की शक्ति का विस्तार करते हुए अपने को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सके। उनकी कार्यशैली में पीड़ा5 खुशी का दुष्प्रभाव नहीं होना, स्वार्थ से दूर अपने नेतृत्व की चमक को दयावान रहते हुए और परोपकारी बनकर ही बनाये रखना श्रेयस्कर है, उसे न तो भय और न ही कोप अपने आस-पास के लोगों से धनात्मक रूप से प्रेरित होना और प्रेरित करना चाहिए, फिर चरित्र नेतृत्वकर्ता का उच्चतम गुण बन जाता है। श्रीमद्भगवदगीता मे नेतृत्वप्रभावकारिता को एकाग्रता (मेडिटेशन) से जोड़कर देखा जाना अद्भुत है।

नेतृत्व वही गुणवत्तापूर्ण है जब नेतृत्वकर्ता अपनी क्षमता गुण-अवगुणों को जानता है। सिर्फ शारीरिक, भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से अपने को मापना काफी नहीं है, यह आगे बढ़कर और उसे सबसे गहरे चेतन अवस्था तक जाना है। एकाग्रचित्त ध्यान अवस्था से ही मनुष्य अपनी चेतना को जान सकता है। व्यक्ति की चेतना उसके मन और शरीर को स्थिर रखती है। हम नेतृत्व को देश, निगम अथवा बड़े संस्थागत के नियामक के रूप में न देखकर उसके प्रभाव का दूसरे के उत्थान और विकास के रूप में व्यापक तौर पर देखे, आत्मा का चेतन मन से समन्वय होता है। इस अवस्था में प्रचुर मात्रा में ऊर्जा प्राप्त होती है और यह ऊर्जा नेतृत्वकर्ता के लिए वरदान होती है।

व्यक्ति के नेतृत्व की क्षमता-विकास में चरित्र और अनुशासन होना अनिवार्य है। आज के आधुनिक नेतृत्वकर्ताओं में इन गुणों का अभाव है। यही कारण है कि शोध में नेतृत्व गुण और कौशल विकास को हम गीता से एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखते हैं। भावनात्मक बुद्धिए

कौशल-विकास, त्याग की भावना, सदाचार और दूसरे के प्रति दया और समर्पण भाव आदि जैसे गुण हम एक सफल नेतृत्वकर्ता से सीख सकते हैं। वर्तमान दौर में नौकरशाही में एकतरफा नेतृत्व का बोलबाला है जिसमें आम आदमी असहाय पात्र के रूप में दिखता है।

श्रीमद्भगवदगीता में त्याग के अर्थ को परिभाषित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि असली त्याग वही है जिसमें स्वार्थ की भावना न हो और साथ ही त्याग करने में संतुष्टि का अनुभव हो। अपनी क्षमता के अनुरूप पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ त्याग कर सभी के हितों साधक बनना ही असली त्याग है। यदि हम प्रभावकारी नेतृत्व पर प्रकाश डालते हैं तब सही त्याग करने वाले व्यक्ति ही विश्व का नेतृत्व अथवा संस्थागत नेतृत्व के लिए उपयुक्त है। मदर टेरेसा ने अपने मूल जन्म स्थान को छोड़कर भारत में गरीबों की सेवा और मदद के लिए निरंतर तत्परता से कार्य किया वास्तव में यही त्याग है। डॉ. किंग ने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रजातीय सौहार्द्र के लिए त्याग में लगाया। हेनरी सूनात अपने प्रतिष्ठित व्यापार को छोड़कर विश्वयुद्ध के जख्मी लोगों की जान बचाने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। नेल्सन मंडेला ने 27 वर्षों तक जेल में रहकर अफ्रीकी रंगभेद नीति के विरुद्ध संघर्ष में बिताया। चौदहवें दलाईलामा ने अपने जन्म स्थान तिब्बत से निर्वासित होकर विश्व शांति और सौहार्द्र के लिए संपूर्ण जीवन संघर्ष में व्यतीत किया। यह सभी वास्तविक त्याग की श्रेणी में आते है।

कुरुक्षेत्र के धर्मयुद्ध में सगी संबंधियों को देखने के उपरांत अर्जुन के विचलित होने पर कृष्ण उनसे संवाद करते है और गीता सार का ज्ञान देते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के नेतृत्व का वर्णन श्रीमद्भगवदगीता के तात्कालिक धर्मयुद्ध में अनूठा तो है ही साथ ही आज भी संस्था और व्यापारिक धर्म अथवा समाज के नेतृत्व में उसकी उतनी ही महत्ता और प्रासंगिकता विद्यमान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 श्रीमाद्भावाद्गीता, अध्याय 5

2 सी.सी. (2007) – ए (1) हौलेस्टिक एप्रोच टू बिजनेस मैनेजमेंट – पर्सपेक्टिव फोग श्रीवता सौगा मैनेजमेंट रिव्यू 29 (1) 73 64

3 गांधी ए लीडरशिप न्यू होरिजन इन एक्सप्लेनरी लीडरशिप (न्यूयार्क पालन 2015)

4 नेशनल लीडरशिप इंडेक्स 2005, पृष्ठ 10

6 होवें ए. (2007) श्रीमद्भगवतगीता : एनोटेड एंड एक्सप्लेनड इन बुरा भगवतगीता दुढस्टाक वीटो स्काईलाईट पाथ पब्लिशिंग

7 महादवेन बी (2012) लीडरशिप लेशन फ्रोम भगवतगीता, इम्पेक्ट जुलाई 2012 पृष्ठ 13.16

8 स्वागतिका नंदा, मैनेजमेंट नेशन फ्रोम भगवतगीता इंटरनेशनल जरनल ऑफ एपलाईड रिसर्च (आइ. जे. एक आर) 2016, 2 (4) 650-652

9 डॉ. मेदा श्रीवास्तव सब लीडरशिप लेसन फ्रॉम भगवतगीता देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनरी अनल (2014) 03, 19-24

10 महादवेन बी, लीडरशिप लेसन फ्रॉम भगवतगीता, इम्पेक्ट, जुलाई 2012

11 गीता अध्याय 12, अरुण कारथ एंड संधीता एस. डॉपिनेस मैनेजमेंट यू भगवतगीता, इंटरनेशनल जरनल ऑफ करेंट एडवांस रिसर्च वाल्यूम 4, इशु 2022 24, 2015